International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030; Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 442-443

मानव जीवन के विकास में पुरुषार्थ का महत्व

अमित सिंह

दर्शनशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रस्तावना

भारतीय नीतिशास्त्र में "पुरुषार्थ" की अवधारणा का एक महत्वपूर्ण स्थान है | 'पुरुष' और 'अर्थ' से बने पुरुषार्थ का तात्पर्य है कि 'पुरुष' का मतलब 'मनुष्य' तथा अर्थ का तात्पर्य 'लक्ष्य' या प्रयोजन है | हम कह सकते हैं कि मनुष्य अपने जीवन में जो भी प्राप्त करना चाहता है या जो भी प्राप्त करना उसका अभीष्ट है, वही उसका पुरुषार्थ है | नैतिक,आर्थिक,मनोशारीरिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों का समन्वय करते हुए 'पुरुषार्थ' का अर्थ सांसारिक और पारलौकिक लक्ष्य और कर्तब्य है | नीतिमीमांसकों ने मनुष्य के भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों को ध्यान में रखते हुए चार पुरुषार्थो का वर्णन धर्म,अर्थ,काम और मोक्ष के रूप में किया है | विष्णुपुराण में भी इसका स्पष्ट वर्णन किया गया है|1 ओशो ने भी 'पुरुषार्थ' की अवधारणा का समर्थन किया है |

पुरुषार्थ की अवधारणा

धर्म -

चार पुरुषार्थों में 'धर्म' को प्रथम पुरुषार्थ के रूप में माना गया है | 'धर्म' संस्कृत के 'धृ' धातु से बना है जिसका तातपर्य होता है, धारण करना | महाभारत में धर्म को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि धर्म प्रजा को धारण करता है |[2] पंचतंत्र में 'धर्म' का प्रयोग मनुष्य और पशु के विभेदक गुण के रूप में किया गया है |3 महर्षि कणाद के अनुसार सांसारिक संमृद्धि और आध्यात्मिक कल्याण कि प्राप्ति जिससे हो वही 'धर्म' कहलाता है |[4] ऋग्वेद के मन्त्र (3/3/1) में 'धर्म' को नियम या विधि कहा गया है, इसे ऋत कहा गया है और इस 'ऋत' से ही ससार का धारण या संचालन होता है |[5]
भारतीय नीतिशास्त्र में 'धर्म' को सदाचार के अर्थ में लिया गया है | मनुष्य एक सामजिक प्राणी है और उसका विकास समाज में ही होता है | समाज की सुव्यवस्था हेतु कुछ नैतिक नियमों का पालन करना आवश्यक होता है | मनुष्य की रुचियाँ, इच्छाएं, आकांक्षा और आवश्यकता के बीच संतुलन धर्म से ही बनाया जा सकता है | आचार एवं सदाचार को धर्म का लक्षण माना गया है|6 मनु के अनुसार धर्म के चार आधार श्रुति,स्मृति, सदाचार तथा आत्मतुष्टि है|[7]
ओशो 'धर्म' की व्याख्या अपने शब्दों में करते हुए इसे 'आत्मज्ञान' के अर्ह में लेते हैं | उनके अनुसार 'धर्म' की उत्पत्ति 'आनंद' की इच्छा से हुई है | ओशो के अनुसार मनुष्य मूलतः आनंदस्वरुप है |यह आनंद उसे अपने स्वरुप के ज्ञान से मिल सकता है अतः अपने स्वरुप का ज्ञान ही 'धर्म' है |[8] धर्म को ओशो 'आर्ट ऑफ़ लिविंग ' कहते हैं|9 जिसे आत्मज्ञान हो जायेगा वह सदाचारी होगा ही |

अर्थ

अर्थ का पुरुषार्थ में द्वितीय स्थान है | अर्थ से तात्पर्य यह है कि जिससे सभी प्रयोजनों की सिद्धि हो वह 'अर्थ' कहलाता है |[10] वात्स्यायन के शब्दों में देखने पर हम पाते है कि - विद्या, भूमि, सुवर्ण, पशु, धान्य, बर्तन आदि घर का सामन तथा मित्रों से वस्त्राभूषण आदि वस्तुओं को धर्मपूर्वक प्राप्त करना और प्राप्त किये हुए की वृद्धि करना ही अर्थ है |[11] चाणक्य के अनुसार अर्ह के अभाव में मनुष्य अपने महत्वकांक्षांओं की पूर्ती नहीं कर सकता है | इस प्रकार अर्थ को जीवन का प्रमुख प्रवर्तक माना गया है |[12] महाभारत में भी 'अर्थ' को उच्चतम धर्म माना गया हैऔर कहा गया है कि प्रत्येक वस्तु उस पर निर्भर करती है, अर्थ संपन्न लोगों को सुखी तथा अर्थ रहित लोग कॉ मृतक के समान माना गया है | धर्मशास्त्रों के अनुसार अर्थ का संचय धार्मिक आधार पर होना चाहिए अनैतिक और अधार्मिक नहीं | महात्मा गाँधी ने भी आवश्यकता से अधिक धन संचय को नुचित माना है | ओशो ने कहा है कि धन की अर्थवत्ता है | "धन ही सब कुछ नहीं है, लेकिन मै यह भी नहीं कह सकता की धन कुछ भी नहीं है | धन की उपादेयता है | धन से बहुत कुछ संभव है | मै यह नहीं कह रहा हूँ कि धन से प्रेम खरीद सकते हैं, लेकिन रोटी तो खरीद सकते हैं और रोटी के बिना प्रेम मुश्किल है |

काम

'पुरुषार्थ' में तीसरे स्थान पर काम का वर्णन किया गया है | काम का प्रमुख लक्ष्य संतानोत्पत्ति व वंशवृद्धि मानी गई है | काम का सर्वोच्च और आध्यात्मिक लक्ष्य यह होता है कि पत्नी में आध्यात्मिक मानव प्रेम,परोपकार तथा सहयोग की भावना का विकास करे | महर्षि वात्स्यायन के शब्दों में - "कान, त्वचा, आँख, जीभ, नाँक इन पांच इन्द्रियों की इच्छानुसार शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गंध अपने इन विषयों में प्रवृत्ति ही काम है |[13] महाभारत में भी यह माना गया है कि आँख, कान, नाँक, मुंह,त्वचा इन्द्रियों का संपर्क जब रूप,गंध, शब्द ......स्पर्श रुपी अपने - अपने विषयों से होता है तब जिस सुख की प्राप्ति होती है उसे काम कहा जाता है |" काम शब्द का प्रयोग संकुचित और व्यापक दोनों ही अर्थों में किया गया है | व्यापक अर्थ में भावना पक्ष से सम्बंधित होता है , इसलिए इस अर्थ में सभी प्रकार की इच्छा, कामना, राग, अभिलाषा की ओर संकेत करता है और इसलिए साहित्य, कला, सगीत तथा सौंदर्य आदि सब काम के अंतर्गत आ जाते हैं | संकुचित अर्थ में यह केवल 'यौन' सुख से जुड़ा है | संकुचित अर्थ में एक आयामी होने के बावजूद यह पक्ष सर्वाधिक महत्वपूर्ण है | 'कामसूत्र' के रचयिता महर्षि वात्स्यायन ने अपने ग्रन्थ में व्यापक परिभाषा देने के बावजूद 'काम' को मुख्यतः यौन केंद्रित ही रखा है |
यद्यपि काम जीवन का महत्वपूर्ण आधार है | इससे ही संतानोत्पत्ति होती है और सृष्टि चलती है | जीवन का प्रमुख अंग होने के बावजूद 'काम' के अतिरेक से बचना चाहिए | इसकी अति एक भयंकर दुर्गुण है | काम के वशीभूत होकर धर्म नहीं छोड़ना चाहिए|14 कौटिल्य ने इसे एंटी श्रेणी में रखा है तथा 'धर्म' 'अर्थ' को बिना बाधा पहुचाये इसके पालन का निर्देश दिया है | मत्स्यपुराण के अनुसार - " धर्महीन काम बंध्या के समान है" महाभारत में कहा गया है कि जो व्यक्ति धर्मरहित काम का अनुसरण करता

है वह अपनी बुद्धि को समाप्त कर देता है | गीता के अनुसार कामी व्यक्ति में बुद्धि नहीं होती है | बुद्धि पुरुषार्थ का आवश्यक आधार है | बुद्धि के द्वारा अपनी इन्द्रियों को अपने वश में रखना चाहिए | इन्द्रिय जिसके वश में होती हैं उसकी बुद्धि स्थिर होती है | विषयों के बारे में सदैव सोचने से उनके प्रति रूचि बढ़ती जाती है , जिससे कामवासना का जन्म होता है | काम तृप्त न होने से क्रोध और क्रोध से मोह उत्पन्न होता है, मोह से स्मृति भ्रमित हो जाती है जिससे बुद्धि नष्ट होने पर व्यक्ति का भी नाश हो जाता है |
ओशो के अनुसार "काम जीवन का हिस्सा है, व्यक्ति की अनिवार्य जरूरत है | अतः उसका विरोध नहीं करके उसे पूरी पवित्रता के साथ स्वीकार करना चाहिए |"

मोक्ष

'मोक्ष' को सर्वोच्च पुरुषार्थ के रूप में स्वीकार किया गया है | मोक्ष सर्वोच्च लक्ष्य है | यही गंतव्य है | इसे ही प्राप्त करना है | 'मोक्ष' ही साध्य है | 'धर्म' 'अर्थ' और काम को साधन के रूप में माना गया है | आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक इन तीन प्रकार के दुखों से मुक्त होना ही मोक्ष कहलाता है | भारतीय दर्शन में कुछ दार्शनिक अज्ञान से छुटकारा पाने को भी मोक्ष मानते हैं | कुछ उपनिषद के अनुसार जीव और ब्रम्ह का तादात्म्य ही मोक्ष कहा जाता है | मुण्डकोपनिषद के अनुसार -"जिस प्रकार प्रवाहशील नदियां अपने नाम और रूप को समाप्त कर सागर में बिलीन हो जाती हैं उसी प्रकार ज्ञानी पुरुष भी अपने नाम और रूप के बंधन से मुक्त होकर सच्चिदानंद ब्रम्ह में लय हो जाता है | वृहदारण्यकोपनिषद में मोक्ष के स्वरुप का वर्णन करते हुए कहा गया है कि - " जो मनुष्य समस्त कामनाओं से मुक्त हो चूका है वह मृत्यु से अमृतत्व की ओर अग्रसर होकर अंततः ब्रम्ह ही हो जाता है | यही जीव का मोक्ष है |" मोक्ष के सन्दर्भ में इस बात पर एकमत हैं कि मोक्ष एक ऐसी अवस्था है जहाँ किसी भी प्रकार का कोई दुःख न होकर आनंद ही आनंद है | इसलिए इस आनंद स्वरुप मोक्ष को प्राप्त करना ही मनुष्य का लक्ष्य है |[15]
भारतीय नीतिशास्त्र में कहा गया है कि देवऋण, पितृऋण, और ऋषिऋण को पूर्ण करने के बाद ही मन को मोक्ष में लगाना चाहिए | इन ऋणों को पूरा किये बिना ही मोक्ष का सेवन करने वाला व्यक्ति नरकगामी होता है |[16]
ओशो भी मोक्ष को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि मोक्ष परम पुरुषार्थ है | अतः इसे ही प्राप्त करने जीवन का आत्यांतिक लक्ष्य है | मोक्ष सुख - दुःख से परे आनंद की अवस्था है | आनंद का वर्णन करते हुए उनहोंने कहा कि "आनंद उस क्षण का नाम है जहाँ कोई तनाव नहीं रहता है, जहाँ कोई भविष्य नहीं रहता, जहाँ समय खो जाता है और यह क्षण 'अभी और यही' का क्षण का अस्तित्व हो जाता है | सब कुछ इसी क्षण में समाविष्ट हो जाता है | उस पल का ही नाम आनंद है |"

निष्कर्ष

वर्तमान युग वैज्ञानिक उपलब्धियों का युग है | आज चारों ओर वैज्ञानिक विकास की धूम मची हुई है | हम देखते हैं कि आज के इस माहौल में नैतिकता के सारे मापदंड शिथिल पड़ गए हैं | नैतिकता की कमी होने के कारण वर्तमान पीढ़ी दिग्भ्रमित होकर कई प्रकार की समस्याओं का शिकार हो रही है | जिससे समाज में हिंसा, भ्रस्टाचार,चोरी आदि बढ़ रही है | वेदों और उपनिषदों में प्रतिपादित नैतिक सिद्धांत मनुष्य को संतुलित और व्यवहारिक जीवन प्रदान करते हैं | इन नैतिक सिद्धांतों के अनुसार व्यक्ति अपने समाज तथा प्राणी मात्रा के प्रति अपने मूल नैतिक कर्तव्यों का निर्धारण कर सकता है | 'पुरुषार्थ' मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यधिक आवश्यक है | प्रथम पुरुषार्थ के रूप में 'धर्म' मानव जीवन के नैतिक पक्ष को सुदृढ़ बनाता है | "पुरुषार्थ" के द्वारा व्यक्ति का नैतिक,धार्मिक,सामाजिक,आध्यात्मिक उत्तरदायित्वों को कुशलतापूर्वक निभाता है |

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. "धर्मार्थ काममोक्षाश्च पुरुषार्थ उदारताः |"- विष्णुपुराण, 1/18
2. "धारणात् धर्ममित्याताहु: धर्मा - धार्यते प्रजाः | यत्स्याइंचारण संयुक्तं सधर्म इति निश्चयः |" महाभारत, कर्णपर्व, 69/58
3. आहारनिद्राभयमैंथुनम च सामान्य मेंतत् पशुरभिनराणां | धर्महिते सामधि को विशेषो धर्मेणहीनाः पशुभिरसमानाः|| - पंचतंत्र
4. "यतोभ्युदयनिः श्रेयसिसिद्धिः सधर्मः| - वैशेषिक सूत्र
5. ऋतेन ऋतं धरुणं धारयन्त, यज्ञस्य शोक परम व्योमने | दिवो धर्मन धरूणे सुदेषो नृंगजातरजाता अभियेननक्षु|| ऋग्वेद 5/1/612
6. आचारः भभते धर्मः | महाभारत - उद्देश्य पर्व 61/510
7. मनुस्मृति 216, 121
8. उर्मिला, एम् . ए. "शान्ति की खोज" पृ. 54/55
9. श्री रजनीश ; "सम्भोग से समाधि की ओर" , पृ. 28
10. यतः सर्वप्रयोग सिद्धिः |"- पुरुषार्थ चतुष्टय पृ. 222
11. "विरदया भूमि हिरण्य पशु धन धान्य भाँडो पस्कर"| मित्रादीनामरजन्मर्जितस्य विवर्धनमरथः||
12. "अर्थार्थ प्रवर्तते लोकः ||- चाणक्यसूत्र, 7/28
13. "श्रोत्रत्वक्च्क्षुजिहंवाघ्राणानामात्म संयुक्तेन मनसाधिरस्थितानाम स्वेषु स्वेषु विषेयध्वानु कलयुताः प्रबृप्तिः कामः |" वात्स्यायन , कामसूत्रम 1/2/11
14. महाभारत स्वर्गारोहण 5/63
15. श्री रजनीश ; "सम्भोग से समाधि की ओर" , पृ. 42
16. मनुस्मृति 6/35